No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-21

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए.हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

एम.एच.डी.-21 : मीरा का विशेष अध्ययन

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक: 50*

नोट: प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 2×10=20

(क) तेरा कोई नहि रोकणहार, मगन होय मीरा चली।(टेर)

लाज सरम कुल की मरजादा, सिर से दूर करी
मान अपमान दोऊ धर पटके, निकली हूँ ज्ञान गली।।
ऊँची अटरिया लाल किंवड़िया, निरगुण सेज बिछी।
पचरंगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली।।
बाजूबंद कड़ूला सोहे, माँग सिंदूर भरी।
सूमिरन थाल हाथ में लीन्हां, सोभा अधिक भली।।
सेज सुखमाणा मीरा सोवै, धन सुभ आज घरी।
तुम जावो राणा घर आपने. मेरी तेरी नाहि सरी।।

(ख) करनां फकीरी क्या दिलगीरी, सदा मगन मन रहना रे।

कोई दिन बाड़ी तो कोई दिन बैंगला, कोई दिन जंगल रहना रे।।

कोई दिन हाथी कोई दिन घोड़ा, कोई दिन पांवों चलना रे।

कोई दिन गादी कोई दिन तकिया, कोई दिन भोय में पड़ना रे।।

कोई दिन खाना तो कोई दिन पीना, कोई दिन भूखे ही मरना रे।।

कोई दिन पहनाँ तो कोई दिन ओढ़ा, कोई दिन चिथरा पथरना रे।।

मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, ऐसा कूता करना रे।।

(ग) (मीराँ) मेरी बात नहीं जग छानी, ऊदाँबाई समझो सुघर सयानी।

साधू मात पिता कुल मेरे, सजन सनेही ज्ञानी।।

संत चरण की सरन रैन दिन, सत्त कहत हूँ बानी।

राणा नैं समझावो जावो, मैं तो बात न मानी।।

मीरां के प्रभु गिरधरनागर सन्तां हाथ बिकनी।।

(घ) न भावै थारौ देसड़लो (जी) रूड़ो रूड़ो।

हरि की भगति करै नहिं कोई, लोग बसे सब कूड़ो।।

माँग और पाटी उतार धरूंगी, ना पहिरूं कर चूडो।।

मीरां हठीली कहे संतन सों, बर पायो छै मैं पूरो।।

2. मीरा के युग की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का परिचय दीजिए। 10

3. अन्य कृष्ण भक्त कवियों से मीरा की भक्ति की तुलना कीजिए। 10

4. मीरा की काव्य भाषा के आधार एवं स्रोतों का विवेचन कीजिए।

5. मीरा की कविता में 'जोगी' के स्वरूप पर विचार कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणियाँ लिखिये: 2×5=10

(क) मीरा की निजता

(ख) भक्ति आन्दोलन के प्रमुख गुजराती कवि

(ग) मीरा की प्रासंगिकता

(घ) बहिणाबाई।

—x—